उषा प्रियंवदा की कहानियों में नारी संवेदना के विविध आयाम

दिलीप सिंह राजपूत, शोधार्थी पी-एच.डी. हिन्दी विभाग, कला एवं मानविकी अध्ययनशाला, मैट्स वि.वि. रायपुर(छ.ग.) मो.-9098771548

शोध-सार- प्रत्येक साहित्यकार अपने युग और समाज के प्रति कुछ दायित्वों से बंधा होता है, जिनका ईमानदारी से पालन करना उसे सफल साहित्यकार बनाता है। इस दृष्टि से उषा प्रियंवदा की रचनाएँ साहित्य जीवन के सभी पहलुओं से जुड़ी होने के कारण अपने समाज के प्रति दायित्वों को ईमानदारी से पूरा करती दिखाई देती है। उषा प्रियंवदा ने अपने समय के कथाकारों से अलग होकर अपने परिवेश को समझने और अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानियों में 'नारी-संवेदना' का मौलिक विवेचन-विश्लेषण कर वर्तमान कथा-भूमि में नवीनता लाने का प्रयास किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी जीवन में अकेलापन, अजनबीपन, पीढ़ीगत अंतराल, निराशा, टूटन, घुटन आदि को अपनी रचनाओं में दिखाने का प्रयास किया है।

उषा प्रियंवदा की कहानियों में 'संवेदना' को अनेक रूपों में स्पष्ट किया गया है। कहीं बहन-भाई के प्यार में संवेदना की मार्मिक पीड़ा, तो कहीं बेरोजगारी, लाचारी, दाम्पत्य संबंधों में अकेलेपन की संवेदना को चित्रित किया है। इसके साथ-साथ नारी संवेदना को भी उकेरने का प्रयास किया है। मध्यमवर्गीय परिवार में बनते-बिगड़ते संबंधों का विघटन, अकेलेपन, तनाव की स्थिति, समस्याओं के बीच नारी की संवेदनशीलता का रूप देखने को मिलता है, तो कहीं नारी के मन में उठी अतृप्त भावनाओं की वेदना को दिखाया गया है।

आधुनिक शिक्षित नारी की नवीन विचारधारा के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं को भी प्रस्तुत करने की कोशिश की है। दाम्पत्य संबंधों में तलाक, संबंध-विच्छेद आदि समस्याओं को भी दिखाया है। नारी संवेदना के अंतर्गत नारी की आशाओं, अपेक्षाओं, सुख-दुःख, राग-द्वेष, हर्ष-शोक, प्रेम-घृणा, विस्मय-उत्साह आदि के साथ-साथ सामाजिक विषमता, रूढ़ियों-परम्पराओं में जकड़ी नारी और

उसकी टूटती-बिखरती आशा, मध्यमवर्गीय तनाव, घुटन तथा अजनबीपन आदि समस्या के प्रति संवेदन-भाव को दर्शाया गया है।

बीज शब्दः दायित्व, अभिव्यक्त, अंतराल, निराशा, घुटन, संवेदना, विवेचन-विश्लेषण, दाम्पत्य, उकेरना, विघटन, संबंध-विच्छेद, तनाव, पीड़ित, बाँधना, संक्रमण, पीड़ा, अतृप्त, पोषण, अकेलापन, पाश्चात्य, मानसिक वेदना, मुक्ति, प्रयास इत्यादि।

उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य से विशेष लगाव रहा है, इसमें भी मानव जीवन के दुःख, पीड़ा, तनाव, निराशा, राग-द्वेष, टूटन, बिखराव, अजनबीपन, अकेलेपन इत्यादि से संबंधित कहानियों के संप्रेषण में विशेष रूचि रही है। उषा जी की अनेक कहानियाँ संग्रह के रूप में प्रकाशित हुई, इनमें से प्रमुख कहानियाँ तथा इसमें अभिव्यक्त नारी संवेदना के विविध रूप निम्नलिखित है-

1.जिन्दगी और गुलाब का फूल-

उषा प्रियंवदा की प्रमुख कहानियों में से 'जिन्दगी और गुलाब का फूल' कहानी में एकाकीपन के साथ-साथ बेकारी की समस्या को भी दिखाया गया है। मध्यवर्गीय परिवार में बेरोजगारी से पीड़ित युवकों की स्थिति को दिखाया गया है। इस कहानी में भी देखा जाए, तो नारी संवेदना भी दिखाई देती है, कि कैसे वृंदा छोटी होते हुए भी परिवार को चलाती है। सुबोध को नौकरी नहीं मिल पाई तो उसकी प्रेमिका भी उसे छोड़कर चली जाती है। इससे भी दुःख की बात सुबोध के लिए यह थी कि 'वह छोटी बहन की शादी नहीं कर पाया था।'[1]

2.छुट्टी का दिन-

इस कहानी में नायिका माया नौकरीपेशा औरत है। जिसने अपने परिवार से अलग रहकर नौकरी करने की मजबूरी एवं अपने जीवन में अकेलेपन का वर्णन किया है। वह जब परिवार में रहती थी, तब उसे पता भी नहीं चलता था कि छुट्टी का दिन कब चला जाता था। माया जब से नौकरी करने लगी है तब से छुट्टी का दिन पहाड़-सा प्रतीत होता है। छुट्टी के दिन माया सिनेमा देखने जाती है। माया का दिल जब सिनेमा देखने में नहीं लगता, तो वह करीब की रिश्तेदार

भैया-भाभी के पास चली गई। भाभी से मिलकर उसका व्यवहार अटपटा-सा लगा। "अपनी जिन्दगी के पैटर्न पर उसके खोखलेपन और सारहीनता पर रोना आ गया था।"[2]

3.मोहबंध-

इस कहानी में उषा प्रियंवदा ने एक ही उम्र की दो नारियों की व्यथा का वर्णन किया है। नीलू और अचला दो महिलाएँ हैं। नीलू सुंदर है और स्वतंत्र विचारों वाली है। नीलू का विवाह राजन से होता है। कुछ समय बाद राजन को लगता है कि नीलू को कुछ ज्यादा ही स्वतंत्रता दे रखी है। वह जो चाहती है, वो करती है। अचला को पता है कि नीलू को बाँधकर नहीं रखा जा सकता। वह राजन से कहती है कि "नीलू को अगर बाँधकर रखेंगे तो वह नहीं रहेगी।"[3] इसी बीच अचला और राजन निकट आ जाते हैं। इस कहानी का अंत राजन और अचला के बीच समर्पित भाव की अनुभूति के क्षण के साथ होता है।

4.पैरम्बुलेटर-

इस कहानी में लेखिका ने नायिका कालिंदी के मन में छिपी भावनाओं को दृष्टिगत किया है। किस तरह एक दम्पत्ति अपने होने वाले बच्चे के लिए होने से पहले ही साइकिल खरीद लेते है। तब उन्हें झटका लगता है, जब उन्हें पता चलता है कि कालिंदी ने एक मृत बच्चे को जन्म दिया है।[4] सबसे अधिक सदमा कालिंदी को लगता है। उसके बाद उसे सास और ननद की सुननी पड़ती है। घर में साइकिल को बेचने की बात चलती है तो कालिंदी को बहुत दुःख होता है, क्योंकि साइकिल में उसकी जान बसती थी। यहाँ लेखिका ने नारी मन में व्याप्त पीड़ा, तृष्णा को कालिंदी के माध्यम से दिखाने की भरसक कोशिश की है।

5.कच्चे धागे-

इस कहानी में उषा प्रियंवदा ने संक्रमण काल में उठी नारी मन की कोमल संवेदना को बताने का प्रयास किया है। कहानी में दर्शाया है कि गरीब परिवार की लड़की की शादी कैसे टूट जाती है। कुंतल गरीब परिवार से थी। कुंतल के रिश्ते

की बात किसी अच्छे घर में करवाने की बात चलती है, तो वह बहुत खुश हो जाती है। बड़े चाव से रंग-बिरंगी चूड़ियाँ लाती है। उसे लगता है जैसे उसने हर चीज पा ली हो। कुंतल की खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिक पाई। जब उसने चाचा गजाधर को कहते सुना कि "तुम्हारा ख्याल ठीक था, हमने बेकार ही राजकृष्ण बाबू से चर्चा की।"[5] ये सुनकर कुंतल ने जितनी रंग-बिरंगी चूड़ियाँ ली थी, सभी को उठाकर पटक दिया। कुंतल की मन की भावनाएँ अतृप्त ही रह गई। लेखिका ने नारी मन में उठी अतृप्त भावनाओं की वेदना को दिखाया है।

6.दो अंधेरे-

इस कहानी में उषा प्रियंवदा ने नारी की समस्याओं और समझौतों की स्थिति को दर्शाया है। नायिका कौशल्या मध्यमवर्गीय परिवार से है। कौशल्या की शादी दिनेश से ही जाती है। जो दिल्ली में नौकरी करता है। उनके एक बेटा और एक बेटी है। दिनेश के जीवन में एक और नारी है जो उसके पड़ोस में रहती है। कौशल्या को इस बात का पता लग जाता है। वह दिनेश से कहती है कि "तुमने मेरा विश्वास तोड़ दिया दिनेश, तुमने मुझे छला। क्या मैंने तुम्हें प्यार नहीं दिया, क्या मैंने तुम्हें अपना शरीर नहीं दिया? मैं कष्टों में भी मुस्कुराती रही, थोड़े में ही संतुष्ट रही, उसका बदला तुमने मुझे इस तरह दिया।"[6]

7.चाँद चलता रहा-

कहानी में लेखिका ने नारी के विभिन्न रूपों में चर्चा की है। इसकी नायिका रोहिणी अपनी शर्तों में जिंदगी जीती है। वह बिना रोक-टोक की जिंदगी जीना चाहती है। बचपन में उसके माता-पिता उसे छोड़कर चल बसते हैं। ताई उसका पालन-पोषण करती है। कई बार उसे मार भी सहनी पड़ती है। वह एक लड़के विनय से मिलती है तो उसे अपने दिल की बात बताती है कि उसकी शादी अरविंद से तय हो गई है। अरविंद ने शादी से पहले उससे संबंध बनाने की कोशिश की तो वह वहाँ से बच निकली और तीन दिन बाद अरविंद की मौत हो जाती है। वह उसी की यादों में खुद को जीते-जी मार डालती है। वह कहती है- "मैंने उस रात अरविंद को

'डिनाई' किया था। मैंने केवल उन्हीं को चाहा था, केवल उन्हें।"[7] रोहिणी अपने मन और शरीर को इस तरह वेदना दे रही है।

8.संबंध-

इस कहानी में लेखिका ने नायिका श्यामला की अकेलेपन की व्यथा को चित्रित किया है। नायिका पढ़ी-लिखी युवती है। वह आधुनिक सोंच रखती है। घर की स्थिति ठीक नहीं है। भाई व छोटी बहन की पढ़ाई की जिम्मेदारी भी उसी के कंधों पर थी। नायक सर्जन जो विवाहित होते हुए भी नायिका से प्रेम करता है। वे दोनों एक दूसरे के साथ खुश भी हैं। नायक, श्यामला के लिए अपनी बीवी और बच्चों को छोड़ने के लिए तैयार है तब वह कहती है, "क्या हम ऐसे ही नहीं रह सकते, प्रेमी, मित्र, बंधु क्या सब कुछ छोड़ना जरूरी है? मैं तो कुछ नहीं माँगती।"[8] श्यामला किसी भी बंधन में बँधना नहीं चाहती। वह समाज, रूढ़ियों, अंधविश्वासों को नहीं मानती।

9.नींद-

इस कहानी में नायिका के मन की भयावह स्थिति में पनप रहे खालीपन को कैसे दूर किया जाए, इसके लिए वह बार-बार नींद एवं अन्य गोलियों का सेवन करती है। नायिका मानती है कि वह पीड़ित है। शरीर के दुख से नहीं अकेलेपन से। नायिका कहती है कि "नहीं, मैं रूग्ण नहीं हूँ। न मुझमें कोई मानसिक विकृति है। वह डॉक्टर मेरा मनोविद झूठ कहता है। मैं पूर्णतया स्वस्थ हूँ। मैं केवल साथ ढूँढती हूँ। कम्पेनियनशिप, तुम्हें जिलाए रखने के लिए।"[9] इस प्रकार लेखिका कहना चाहती है। कि मनुष्य सभी समस्याओं से लड़ सकता है लेकिन अकेलेपन से नहीं।

10.सागर पार का संगीत-

इस कहानी में लेखिका ने पाश्चात्य संस्कृति का व्याख्यान कर नारी के अकेलेपन, अजनबीपन, संत्रास की पीड़ा एवं उत्तेजना की संवेदना को दिखाया है। अकेलेपन से दुखी होकर वह मानसिक रूप से पीड़ित भी हो जाती है। नायिका देवयानी स्वयं के बारे में बताती है- "नहीं... घर की याद नहीं है। न जाने क्या हो गया है। मेरे

अंदर जैसे एक दानव है जो हर घड़ी मुझे नोचा करता है। मैं भटकती हूँ, कुछ सोचती हूँ कुछ देर काम में मन लगता है फिर उचट जाता है और कुछ अच्छा नहीं लगता। तब मन चाहता है कि रेत में पैर गड़ा दूँ और सागर-तट पर बैठी रहूँ।"[10] नायिका पति का साथ न मिलने से मानसिक रोग से ग्रस्त हो जाती है।

निष्कर्ष-

इन कहानियों के अलावा और भी कहानियाँ हैं जिनमें नारी संवेदना को लेखिका ने उकेरा है। आज के बदलते हुए जीवन-मूल्यों व नारी से संबंधित संवेदना को प्रकट किया है। 'मुक्ति आंदोलन' के बाद भी नारी की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में कोई सुधार नहीं आया है। लेकिन इन सबके बीच नारी जाति अपने उचित स्थान को पाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. प्रियंवदा, उषा, कितना बड़ा झूठ, पृ.-137.
2. प्रियंवदा, उषा, छुट्टी के दिन, पृ.-176.
3. प्रियंवदा, उषा, मोहबंध, पृष्ठ-94.
4. प्रियंवदा, उषा, पैरम्बुलेटर, पृष्ठ-11.
5. प्रियंवदा, उषा, कच्चे धागे, पृष्ठ-51.
6. प्रियंवदा, उषा, दो अंधेरे, पृष्ठ-77.
7. प्रियंवदा, उषा, चाँद चलता रहा, पृष्ठ-86.
8. प्रियंवदा, उषा, संबंध, पृष्ठ-15.
9. प्रियंवदा, उषा, नींद, पृष्ठ-70.
10. प्रियंवदा, उषा, सागर पार का संगीत, पृष्ठ-63.